TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4421**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

कर्मग्रंथ१

॥६०॥ श्रीवीरजिनप्रतैं वांदीनैं कर्मनो विपाक नो फल समासथी संक्षेपथी कहिसुं कीजै जीवइ हेतु करी जिण कारणि भणीइं कर्म मिथ्यात्व अविरति कषाय योग ए हेतु करी जीवइ कर्म बांधीइं ते भणीइं कर्म कहीइं ॥१॥

सिरिवीरजिणं वंदिय कम्मविवागं समासओ वुच्छं ॥ कीरइ जिएण हेऊहिं जेणं तो भन्नए कम्मं ॥१॥

प्रकृति स्थिति रस प्रदेश बंध ते कर्म बिहुं भेदे ... मोदकनइ दृष्टांतइ ... मूल प्रकृति ... उत्तर प्रकृति ...

पयइठिइरसपएसा तं चउहा मोअगस्स दिट्ठंता ॥ मूलपगइट्ठ उत्तरपगईअडवन्नसयभेअं ॥२॥

ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनीकर्म ४ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८ ... आउखाकर्म ५ ...

इह नाणदंसणावरणवेयमोहाउनामगोआणि ॥ विग्घं च पणनवदुअट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥३॥

मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनःपर्यव ४ केवलज्ञान ५ ... ज्ञान १ ज्ञान २ ज्ञान ३ ... पांच ज्ञान

मइसुयओहीमणकेवलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं ॥ वंजणवग्गह चउहा मणनयणविणिंदियचउक्का ॥४॥

... व्यंजनावग्रह ... मन अने नयन विना इंद्री ... अर्थावग्रह ...

अत्थुग्गहईहावायधारणा करणमाणसेहिं छहा ॥ इय अट्ठवीसभेयं चउदसहा वीसहा व सुयं ॥५॥

... अवग्रह ईहा अपाय धारणा ... पांच इंद्री अनइ छट्ठो मन ... ए अठावीस भेद मतिज्ञानना ... श्रुतज्ञान ॥५॥

1

श्रुतस्क   मन्नी१ सम्यग्‌श्रुतजिन सादि३ स्वलुनिश्चइंसपर्यवसितश्रुते   अंगप्रविष्टश्रुतंगमाद्यिकालिकंतनपमाते वोलक्रमराबादीलइ॥६
नज्ञानं   न२   नालाविनश्रादिश्रुत॥ त॥   मद्दितपसम्यक्रमराअपाथ॥

।५।अक्खर१सन्नी२सम्मं३साइअं४खलुसपज्जवसिअं५च।गमिअं६अंगपविट्ठं७सत्तविएएसपडिव

गइइंद्रियकायपयमाद्रिपकबालज्ञानशानसंघातनश्रुत।विइबालिज्ञानइनसंघातसमासश्रुत।धगइइंद्रियकाय।पद्मादिपकद्वारपरिज्ञानानाश।
नियतिश्रुतनिविशस्ज्ञानइनप्रतिपत्तिसमासश्रुतपसंतपद्मवणाद्यापमोहद्रिपकाबालज्ञानइनश्रुतज्ञानश्रुत।सघलाज्ञानइनश्रुतज्ञानागमसमासश्रु
तकहीइ॥ ज्ञपकपाहुडीज्ञानइनपाहुडश्रुतनउ।ज्ञपाहुडपाहुडपवीसंज्ञानइनपाहुडसमासकहीइ॥

समनतीवानज्ञानइकरइकहावइन्यमपज्ञानइ।कवलज्ञानतालदज्ञानिघाईणइघइत वीनविइपदानरिङ्मतीकहीइ।विउलमतीविशेषपकउत्तेदइ
ज्ञानइपनलइबालदव्यापकइकउविउलमती।केवलज्ञानतउपकहिलदइ॥ ५आघातावमीतवर्थ॥३५

क्खा॥६॥पज्जय१अक्खर२पय३संघाया४पडिवत्ति५तहयअणुओगो६।पाहुडपाहुड७पाहुड

ज्ञवीसिद्धानउपकवस्तुज्ञानइनवस्तु   पकशर्वज्ञानइनसर्वश्रुत   आगामीयउलियश्रावइ क्षयविसिनज्ञानइशामिवइगोकपनवजइनिशेखिद
घणावसुज्ञानइतवस्तुसमास॥   घणासर्वज्ञानइनसर्वश्रुतसमास॥   पइधनविनइबिइलिमानाउगामीकहीइ।क्षयाइउपपइक्रमनइपवइवाधयाने

८।वत्थू९पुव्वाय१०ससमासा।७।अणुगामि१वड्ढमाणय२पडिवाई३इयरहाछहाओ

अवधिज्ञानउपनापछीपडइज्ञाइनपडिवाईकहीइ।प्रतिपातिदकप्पराटाकलाकीइ।पतलइश्रुतावधिज्ञान   एपाश्रमाअउपश्रावइश्राबरणतिप्रतिना
बलइज्ञाविवा॥ इत्यइमनपर्यवज्ञाननातदकहीइ।पकरिउमतिमनपर्यवज्ञानकहीइ।ज्ञानमानवपणइ४   सर्वपरीतममतिज्ञानावरणआदिदइ

ही।७।रिउमई१विउलमई२मणनाणं४।केवलमिगविहाणं५।एएसिंजंआवरणं।पडुव्वचक्खुस्स

लपावरणानइमनावरणदिक्षआदितावलसादाशवालदविज्ञाणवि पातीयावाग्दर्शनावरणा   चक्षुकहिनोश्रविरत्नचक्षुदर्शकहताविपवाक
लिखु॥८॥   तात्पारिइडी॥

तंतयावरणं।८।दंसणचउपणनिद्दावित्तिसमंदंसणावरणं।९।चक्खुदिट्ठिअचक्खुसेसिंदि

वर्तमानकहीइ
ऊपनापछीवइ
वाधइ२उहाइ
तदीयमानक
हीइ।मध्यवधि
ऊपनापछीजाइ
नहीतनपडिवा
ईकहीइ॥

२

अवधिदर्शनइकेवलदर्शनकेवलदर्शनसालिवइ।दर्शनइहामा।सामान्यउपयोगज्ञानलिखुंनेदइश्रावरणनेवइसनेदशालिखु॥ इइचिकसेदपञइ   पाठांतरं॥
पाठांतरस्यालिखु॥

अधारवदिशकवालहिंचथादंसणमिहसामन्नंतस्सावरणंतयंचउहा।१०।दवईचउहापाठांतरं

सुखिइजागइतिनिद्राकहीइ१   निद्रानिकहीइदुःखिइजागइ२२   पवलानेकहीइऊभिविउविगकर्मोश्रावइ३   पचलापचलाकहीइऊभिनिद्राइइनां

सुहपडिबोहानिद्दा१निद्दानिद्दायदुक्खपडिबोहा२पयला३ठिओवविट्ठस्सपयलपयला४उचंकमि

श्रावइ ऊदिवसनोचीतव्याअर्थनाकरण ऊमिराश्रावइदिवसनोचीतव्याकामकरइ   इवालइनाश्रीअर्द्धबलइघीणद्धीनिद्रा   तिवादिवासराशविकनेदवे
दारीकहइ॥   सर्वबलिमिलाकहीइ॥ अर्द्धचक्रीकइसोवाकु श्रावइलतइप॥ मधुखरडीधाराइनीधार

ओ।११।दिणचिंतिअत्थकरणी।थीणद्धीअद्धचक्किअद्धबला।५।महुलित्तखग्गधारा।लिहणंवदुहाउवे

दनीकर्मनो   वमनेकइनोखधइशादिइसाता   अशातानोइतनोप्राहिइतिर्यचश्रमइ   तिमाइतनीकर्मविकलमादपकदर्शनमोहनीबीजउंचारित्रमो
    पइतीसुरदेवताश्रनइमनुष्यमइवेदना   नारकीनइकहीइ॥

अणिअं।१२।ओसन्नंसुरमणुएसायमसायंतुतिरियनरएसु।मज्जंवमोहणीयंदुविहंदंसणच

हनी॥१३॥   दर्शनमोहनीत्रिविधसम्यक्त्वमोहनीमिश्रमोहनीतथाएवमिथ्यात्वमोहनी॥शुद्धउअर्द्धविशुद्धअविशुद्धअनुक्रमइजाणवुं

३ रणमोहा।१३।दंसणमोहंतिविहंसम्मंमीसंतहेवमिच्छत्तं।सुद्धंअद्धविसुद्धंअविसुद्धंतंहवइ

कहइ॥१४॥   जीवतत्त्वअजीवतत्त्वपुण्यतत्त्वपापतत्त्वआश्रवतत्त्वसंवरतत्त्वबंधतत्त्वमोक्षतत्त्वनिर्जरातत्त्वएजेणइकरीनवतत्त्वसद्दहतेसम्यक्त्वकही

कमसो।१४।जिअअजिअपुण्णपावासवसंवरबंधमुक्खनिज्जरणा।जेणंसद्दहइतयं

2

कर्मग्रंथ

सम्मं खइगाइ उवसमाइ स्वं ॥१५॥ मीसा न रागदोसा जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ॥ नालियरदीवमणुणो

१ मिच्छं जिणधम्मविवरीअं ॥१६॥ सोलसकसाय नव नोकसाय दुविहं चरित्तमोहणीअं ॥ अ

ण अपच्चक्खाणा पच्चक्खाणा य संजलणा ॥१७॥ जाजीववरिसचउमासपक्खगा नरयतिरि

यनरअमरा ॥ सम्माणुसव्वविरई अहखायचरित्तघायकरा ॥१८॥ जलरेणुपुढविपव्व

यराईसरिसो चउव्विहो कोहो ॥ तिणिसलयाकट्ठट्ठियसेलत्थंभोवमो माणो ॥१९॥ माया

वलेहिगोमुत्ति मिंढसिंगघणवंसिमूलसमा ॥ लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसमाणो ॥ २

क

॥२०॥ जस्सुदया होइ जिए हास रई अरइ सोग भय कुच्छा ॥ सनिमित्तम

न्नहा वा तं इह हासाइ मोहणीअं ॥२१॥ पुरिसित्थि तदुभयं पइ अहिलासो जव्वसा हवइ सो उ ॥ थीन

र नपुवेउदओ फुंफुमतणनगरदाहसमो ॥२२॥ सुरनरतिरिनरयाऊ हडिसरिसं

नामकम्म चित्तिसमं ॥ बायालतिनवइविहं तिउत्तरसयं च सत्तट्ठी ॥२३॥ गइजाइतणु

उवंगा बंधणसंघायणाणि संघयणा ॥ संठाणवण्णगंधरसफासअणुपुव्वि विहगगई

गई ॥२४॥ पिंडपयडित्ति चउदस परघाउस्सासआयवुज्जोअं ॥ अगुरुलहुतित्थनिमिणो 3

कर्मग्रंथ

वघायमिअ अट्ठ पत्तेआ ॥२५॥ पिंडपयडित्ति चउदस । परघाउस्सास आयवुज्जोअं । अगुरुलहु

सासायवुज्जोअ निम्माण तित्थयरं ॥२६॥ पत्तेअं तसबायरपज्जत्तं पत्तेअ थिरं सुभं च

सुभगं च सुसराइज्जजसं तसदसगं थावरदसं तु इमं ॥२७॥ थावरसुहुमअपज्जं

साहारणअथिरअसुभदुभगाणि । दुस्सरणाइज्जाजसमिअ नामे सेअरा वीसं ॥२८॥

तसचउथिरछक्कं अथिरछक्कं सुहुमतिग थावरचउक्कं । सुभगतिगाइविभासा तयाइ

संखाहिं पयडीहिं ॥२९॥ वन्नचउ अगुरुलहुचउ तसाइदुतिचउरछक्कमिच्चाइ पायंतरं

३

गइआईण उ कमसो चउपणपणतिपणपंचछच्छक्कं । पणदुगपणट्ठचउदुग इय

उत्तरभेअ पणसट्ठी ॥३०॥ अडवीसजुआ तिनवइ संते वा पनरबंधणे तिसयं । बंधणसंघायगहो तणूसु सामन्नवन्न

चउ ॥३१॥ इअ सत्तट्ठी बंधोदए अ न य सम्ममीसया बंधे । बंधुदए सत्ताए वीसदुवीस

सयं ॥३२॥ निरयतिरिनरसुरगई इगबिअतिअचउपणिंदिजाई

ओ ॥३३॥ ओरालविउव्वाहारगतेअकम्मण

4

एपांचशरीर। पांगनरइंजालिवा॥ बाहरूजांघपुठि मस्तक दीयरउदरपेटएआठअंगजालिवा। उपांगआंगुलीप्रमुखजालिवा

ण्पयणसरीराइ। पांगंतरा। बाहूरूपिट्ठिसिरउरउयरंगउवंगअंगुलीपमुहा॥

शेषथाकतानाअवयवअंगोपांगजालिवो। पहिलातिहुंशरीरनइअंगोपांगहुइ।३४। ऊदारिकपुद्गलनेआगलबांध्याछइ अनइनवाऊदारिकपुद्गलबांधतां

सेसाअंगोवंगा। पढमतणुतिगस्सुवंगाणि।३४। उरलाइपुग्गलाणं। निबद्धबज्झंतयाणसंबंधं

संबंधमाहिलि मउसंबंधकरइजेमिनीममाना। बंधनजालिवो। ऊदारिकादिचारी ऊदारिकादिपांचशरीरनांजेनामातेहजपांच ऊसंघातिपकर्मकरइ

पांचमनामनाम॥३५॥ बंधननांनाम॥ दारिकादिपुद्गलनइ

जंकुणइजउसमंतं। बंधणमुरलाइतणुनामा।३५। उरलाइबंधणंनवं। पांगंतरं। जंसंघायइउरला

तणनागणसमाप्तनइदंतालीना पांचसंघातन ऊदारिकबंधनविकबंधन

पविनमपालनकदीसो नामजालिवा॥३६॥ आहारकआहारबंधन॥

इपुग्गलेतणगणंवदंताली। तंसंघायंबंधणमिवतणुनामेणपंचविहं।३६। उरालविउव्वाहारय

आहारकनामप्रत्येकबंधन ऊदारिकतैजसबंधन ऊदारिककार्मणबंधन वैक्रियकार्मणबंधन आहारककार्म ऊदारिकतैजसकार्मणबंधन

वैक्रियकार्मणबंधन। वैक्रियतैजसबंधन आहारक णबंधन तेजसकार्मणसहितकरतांनवबंधन॥३७॥

णसगतेअकम्मजुत्ताणं। नवबंधणाणिइयरदुसहियाणंतिन्नितेसिंच।३७। उरलाइणंसगप

वैक्रियतैजसकार्मणबंधन तैजसबंधनइणइप्रकार ऊदारिकआदिदेईसघलापणनामिपबंधनतेजसमहितपनरबंधनथा। पहिलातिहुंसंघातनाम

आहारकतैजसकार्मणबंधन तैजसकार्मणबंधन १५ सकार्मणत्याहाइ। पनिरिवबंधकरतां१५ बुधा इमपनरपाठांतरइं॥३८॥

तिअकम्मजुत्ताणंपनरबंधा। पढमाणंतिअकम्माहिं। तिन्निअपनरबंधणयाइणपागं

[४]

संघयणअस्थिहाडनउनिचयसमूहतेछप्रकार। वज्रऋषभनाराचसंघयण१ ऋषभनाराचसंघयण२ नाराचसंघयण३ अर्धनाराचसंघयण४।४६। ३९॥

सरं। संघयणमट्ठिनिचउ। तंछद्धावज्जरिसहनारायं। तहरिसहनारायं। नारायंअद्धनारायं।

कीलिकासंघयण५ छेवट्ठसंघयण६ ऋषभकहेतापाटउ कीलिकावज्रअस्थि उभयमर्कटबंधनेनाराचकहीइ। ऊदारिकशरीर

ण। कीलिअछेवट्ठंइह। रिसहोपट्टोअकीलिआवज्जं। उभउमक्कडबंधो। नारायंइममुरालंगं

४०। समचउरससंस्थान१ निग्रोहसंस्थान२ सादिसंस्थान३ कुब्जसंस्थान४ वामनसंस्थान५ हुंडकसंस्थान६ वर्णपांचकहइछइ। किसनवर्ण नीलवर्ण लोहितरातु

नइहुइसंस्थानजालिवा॥४६ वर्ण

४०। समचउरंसंनिग्गोहसाइखुज्जाइवामणंहुंडं। संठाणावन्नाकिण्हनीललोहिअ

हलद्रपीलउवर्ण श्वेतवर्णधवलु गंधसुरभिगंधदुरभिगंध रसपांचकहइछइ तीखउ कडुअउ कसायलउ खाटउ मधुररस५ फरस

वर्णपांच॥४१॥

हलिद्दसिआ५। णाधरा। सुरहिदुरही। रसापण। तित्तकडुकसायअंबिलामहुरा। फा

आठकहइछइ भारी हलूउ सुंहाला खरधरसनाडुपकडइ चोपडउफरस लूखउफरस८ नीलउवर्ण कालुवर्ण दुर्गंधइनीखुरसकडू

आठफरस॥४२॥

सागुरुलहुमिउखर। सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा।४१। नीलकसिणंदुगंधंतित्तंकडु

रसभारीफरसकठिनफरसलूखु सीतफरस एणनवकनिअसुभजालिवा। इग्यारसनकनिमषाकनीसुभजाणवा॥४३॥ आनिगतिनापरिडुआ

लूफरस॥ उपवीजालिवा॥

अंगुरुंखरंरुक्खं। सीअंचनिअसुहनवगं। इक्कारसगंसुभंसेसं।४२। चउहगइव्व

5

कर्मग्रंथ

गति आनुपूर्वी एक अंकराशि निवारइ इत्यर्थ विदिक कहीए गतिनइ आनुपूर्वी एक कराइ अनइ आउ सुभ गति अनइ अशुभ गति ते वृषभ अनइ ऊंटनी गतिसरीषी
शुभ पचक कहिइ आउ उदय वक्रगतिमांहि होइ करनी गतिसरीषी ॥४४॥

उत्तो । गइ पुव्वि दुग तिग नियआउजुअं । पुव्वीउदउ वक्के । सुह असुह वसुट्ट विहगगई ॥४४॥

पानइ उदयइ प्राणी जीव । परनइ राजादिक बलवंतनइ दुर्धर्ष करी सकइ जे पोताना उदयइ उश्वास लेवा समर्थ होइ ते ऊसास नाम कर्म ॥४५॥

परघा उदया पाणी । परसिं बलिणं पि होइ दुद्धरिसो । ऊससणलद्धिजुत्तो । हवेइ ऊसासनामवसा ॥४५॥

सूर्य मंडल विमानिका पृथ्वीकायना जीव आतापनाम उदयइ ... तापनउ उदय ... उष्णस्पर्श लोहितवर्ण उदयइ
ताप करी ... प्रकाश ...

रविबिंबे उ जिअंगं । तावजुअं आयवाउ न उ जलणे । जमुसिणफासस्स तहिं । लोहियवन्नस्स उदउत्ति ॥४६॥

उदयनाम ... उद्योत करइ ते उद्योतनाम कर्म ... देवता उत्तरवैक्रिय शरीर ज्योति
तापनाम कर्म नहीं ॥४६॥ नाउदय जाणिवउ ... चंद्रादिक ग्रहादिक

अणुसिणपयासरूवं । जिअंगमुज्जोअए इहुज्जोआ । जइदेवुत्तरविक्किअ । जोइस खज्जोअमाइव्व ॥४७॥

उद्योतनाम कर्म कहीइ ॥४७॥ अंग गुरु नहीं अनइ हलूउ नहीं जीवनइ अगुरुलघु नाम कर्म उदयइ तीर्थंकर नाम कर्म त्रिभुवननइ पूज्य

अंगं न गुरु न लहुअं । जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया । तित्थेण तिहुअणस्स वि । पुज्जो से उदओ केवलिणो ॥४८॥

... केवलज्ञान पामइ ॥४८॥ अंगोपांग नीपजावइ निर्माण नाम कर्म करइ । निपजावइ शरीर जाणिवउ उपघात नाम कर्म उदय हणइ
करतां जीव पर ...

अंगोवंग नियमणं । निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं । उवघाया उवहम्मइ ५

नाक आपणा शरीरना अवयव पडिजीभ ... पांचइंद्रिय ... बादर नाम कर्म बादर जीव स्थूल ...
शरीर ... करी ॥४९॥ ... मही ...

संतणु वयबलं विगाइ दिता । बि ति चउ पणिंदिय तसा । बायरउ बायरा जिआ थूला । नि॥

आपणी पर्याप्ति ... पर्याप्ति नाम कर्म ... प्रत्येक नाम कर्म ... प्रत्येक नाम कर्म ... थिर नाम कर्म
... पर्याप्ति ... ॥५०॥ उदय ... दांत अस्थि ... थिर नाम कर्म

अ नियपज्जत्तिजुआ । पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥५०॥ पत्तेअ तणू पत्ते । उदएणं दंतअट्ठिमाइ थिरं । ना अ॥

नाभि ऊपर ... शुभ नाम कर्म ... सौभाग्य नाम कर्म उदय ... सुस्वर नाम कर्म उदय मधुर ... आदेय नाम कर्म उदय ...
... ॥५१॥ ... वचन सर्व लोक

भुवरि सिराइ सुहं । सुभगाउ सव्वजणइट्ठो ॥५१॥ सुसरा महुरसुहझुणी । आइज्जा सव्वलोअगिज्झ-

... ॥५१॥ यशनाम कर्म यश कीर्ति ... थावर दशक ... गोत्र कर्म ... उच्च ... नीच ...
... ॥५२॥ ... कुंभार ...

वओ । जसओ जसकित्ती । थावरदसगं विवज्जत्थं ॥५२॥ गोअं दुहुच्चनीअं । कुलाल इव सु-

... ॥५२॥ विघ्न दानांतराय लाभांतराय भोगांतराय उपभोगांतराय वीर्यांतराय ॥५३॥ अंतराय कर्म ... भंडारी
...

घडभुंभलाईअं ॥५२॥ विग्घं दाणे लाभे । भोगुवभोगेसु वीरिए अ ॥५३॥ सिरिहरिअ समं एअं । जह पडि-

... राजा ... एवं ... अंतराय कर्म करी जीव ज्ञानवंत ज्ञानी ...
... दानादिक करी न सकइ ॥५४॥ उपघात करइ ...

कूलेण तेण रायाई । न कुणइ दाणाईअं । एवं विग्घेण जीवो वि ॥५४॥ पडिणीअत्तणनिह्नव उवघाय 6

व कर्मग्रंथ

चेनराय करतउ। अनिशानिनी आशातना करतउ ज्ञानावरण अनइ दर्शनावरण ए बिहु कर्म जीव उपार्जइ॥५४॥ गुरुनी सक्तिं माबापनी दयाव की

पउसअंतराएणं। अच्चासायणयाए। आवरणडगं जिउ जयइ॥५४॥ गुरुभत्तिखंतिकरुणा

व्रत पालिवाउ योग मन वचन कायानी जीपिवाउ कषाय धर्मनइ विषइ निश्चल हुतउ एहवउ एहवी करणी करतउ जीव सातावेदनी उन्मार्गनी
जीपिवानउ दानादेइ हुतउ। जीव सातावेदनी उपार्जइ॥ उपार्जइ॥५५॥

वयजोगकसायविजयदाणजुउ। दढधम्माइअज्जइ सायमसायं विवज्जयउ॥५५॥ उमग्ग

शनादेतउ हुतउ अनइ श्रीधर्मनउ मार्गनउ नासा देवद्रव्य अपहरतउ हूउ दर्शनमोहिनी कर्म उपार्जइ वीतराग निमाज्ञा श्री संघ एतलानउ प्रत्यनीक हूंतउ दर्शनी कर्मउपा
इउ उहूउ विपरीत निमहात्मा जिन र्जइ॥५६॥

देसणामग्गनासणा। देवदव्वहरणेहिं। दंसणमोहं जिणमुणि। चेइअसंघाइपडिणीउ॥५६॥ दु

विहुंभेदे चारित्रमोहिनी कर्म कषाय हास्यादि एहनइ विषइ विवसमन करतउ चारित्रमोहिनीकर्म उपार्जइ॥५७॥ महापरिग्रहनइ विषइ रत आसक्त
उपार्जइ करतउ अवशपमन लेउ कषायवंतउ बांधइ नरगनउं आउखउं महारंभ लोभ अनइ रौद्रध्यानी वर्त्तत

विहंपि चरणमोहं। कसायहासाइविसयविवसमणो। बंधइ नरयाउ। महारंभपरिग्गहरउ

रुद्दो॥५७॥ तिर्यंचनउं आउखउं बांधइ अनइ शल्य सहित मायावी हूतउ मान सहित हूतउ मनुष्यायुष प्रकृतिइं स्वभावइं थोडी कषाय हूतउ दानदेवानी रुचि हूतउ अनि
शठ हृदय ठगारउ तिर्यंचनउं आउखउं बांधइ॥ रागद्वेषरहित मध्यम गुण

रुद्दो॥५७॥ तिरिआउगूढहिअउ सढो ससल्लो तहा मणुस्साउं। पयईए तणुकसाउ। दाणरुई मज्झिमगु

वउ॥५८॥ अविरतगुणठाणउं आदिदे बालतपस्वी अकामनिर्जरानउं आउखउं बांधइ सरलचित्त अगारव रहित हूतउ शुभनाम कर्म उपा
देवतानउं आउखउं बांधइ॥ रहितउ र्जइ अन्यथा

णो अ॥५८॥ अविरइमाइ सुराउं। बालतवाकामनिज्जरो जयइ। सरलो अगारविल्लो सुहनामं अन्न

६

अशुभनामकर्म उपार्जइ॥६०॥ गुणग्राही रहित मदरहित अध्ययन अध्यापन रुचि नित्य करइ जिन आदि देवनी भक्ति करइ उच्च गोत्र बांधइ एहथी विपरीत नीच

हा असुहं॥६०॥ गुणपेही मयरहिउ अज्झयणज्झावणारुई निच्चं। पकुणइ जिणाइभत्तो उच्चं नीअं इअर

इ नीच गोत्र बांधइ॥६१॥ श्री जिननी पूजानइ विषइ विघन अंतराय करतउ हिंसानइ विषइ तत्पर हूतउ विघन अंतराय कर्म उपार्जइ इणी परिइं ए कर्मविपाक ग्रंथ
धरा॥६१॥

हाउ॥६१॥ जिणपूआविग्घकरो। हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं। इअ कम्मविवागोयं। लिहिउ देवि

लिखिउ कीधउ श्री देवेंद्रसूरि गुरु
प्रतिबोधवानई अर्थि इं बोधसाधइ इति कर्मविपाक ग्रंथ समाप्तः॥१॥ ॥श्री॥ ॥हिवइ गुणठाणानउं विचार श्री वीर जिन स्तवइ यथा श्रीमहावीर गुणठाणानइ विषइ

दसूरीहिं। इति कर्मविपाकसंग्रहः॥१॥ ॥तह थुणिमो वीरजिणं। जह गुणठाणेसु सयल

सघलां कर्मनउ बंध कीधउ उदय कीधउ उदीरणा कीधी सत्ता इमि परमात्मा अनइ सत्तानी जिम क्षय कीधां तिम स्तविसु॥१॥ मिथ्यात्व सास्वादन मिश्र अविरति गुणठाणउं धरइ

लकम्माइं। बंधुदउदीरणयाए। सत्ताएपत्ताणि खविआणि॥१॥ मिच्छे सासण मीसे अविर

देशविरति प्रमत्त अप्रमत्त निवृत्तिबादर अनिवृत्तिबादर गुणठाणउं सूक्ष्मसंपराय १० उपशांतमोह ११ क्षीणमोह १२ संयोगकेवली १३ अयोगि

यदेसपमत्तअपमत्ते। निअट्टिअनिअट्टि। सुहुमुवसमखीणसजोगिअजोगि

केवली १४ एवं चउद गुणठाणा॥२॥ अभिनव नवां कर्मनउं ग्रहणकाले ए कर्मबंध कहीइ उपवंध इति हां एकसउ वीस प्रकृति सर्व जीव आश्री बांधइ तीर्थंकरनामकर्म आहारक द्विकर पछि एप्रकृति वर्जीनइ मिथ्यात्व गुणठाणइ

गुणा॥२॥ अभिनवकम्मग्गहणं बंधोउहेण वीससयं। तित्थयराहारगदुगवज्जं मिच्छंमि

7

कर्मग्रं

एकमर्त्यनरकद्विकंधाशा३॥ नरकत्रिकंस्थावरचतुष्कं हुंडकसंस्थानं आतप   छेवठ्ठं नपुंसकवेदः मिथ्यात्व ३।एकत्र। षोडश   प्रत्यासन्नप्रकृतिग्रंथकारः

१६ सनरयतिगजाइथावरचउहुंडायवछिवट्ठनपुमिच्छं सोलंतो इगहि-

मर्त्य सास्वादने बंधः ।१०१ तिर्यंचत्रिक ३ स्त्यानर्द्धित्रिक ३ दौर्भाग्यत्रिक ३॥४॥ अनंतानुबंधिकषायचतुष्क विविधसंस्थान ४॥ नीचैर्गोत्र उद्योतनामकर्म

यसयं सासणि तिरिथीणदुहगतिगं ॥४॥ अणमज्झागिइसंघयणचउनिउज्जोअ-

अशुभगति स्त्रीवेदः एवं पंचविंशतिप्रकृतिनामंतः कृतः ।२५ नरदेवता मनुष्यानुपूर्वी बाधइ एतलइ मिश्र गुणस्थानकइ चउमोत्तरि प्रकृतिबंधः॥५॥ सम्यक्त्वगुणस्थानकइ अवश्य आउषां स्वत्वीर वा

कुखगइत्थित्ति। पणवीसंतो मीसे चउसयरि दुआउअअबंधा ॥५॥ सम्मे सगसयरि जिणाउ-

ध्रुव कर्मसंघननाराचसंघयण नरमनुष्यत्रिक द्वीतीयकषाय अप्रत्याख्यानीयाः॥ औदारिकद्विकं एवं प्रकृति अंतोदयविरतिस्थानकइ बांधइ॥ तीजा प्रत्याख्यानीया कषायांतनइ सडसठि प्रकृतिनउ बंध॥६॥

बंधि वइरनरतिगबिअकसाया। उरलदुगंतो देसे सत्तट्ठी तिअकसायंतो ॥६॥

प्रमत्तगुणस्थानकइ बंध कहिउ॥ शोक अरति १ अस्थिर अशुभ २ अयश १ असातावेदनी १ एह प्रकृति विच्छेद पडइ छिवउ अथवा सातम्रउ सत्तावी देवनउ आउ बांधी नइ परिवासिद्धइ सा-

तेवट्ठि पमत्ते सोग अरइ अथिरदुग अजस अस्सायं। वुच्छिज्ज छच्च सत्त व नेइ सुराउं जया निट्ठं

नउ विच्छेदानंतर अप्रमत्तगुणस्थानकइ एतलउ बंध कहिउ॥ सुरायु आउ उवहउ त्रणि गुणस्थानकइ अन्यथा अठावन प्रकृति बाधइ उत्तर आहारक द्विक उबंध बाधइ उत्तरमत्तगुणस्थानकइ

यानि गुणसट्ठि अप्पमत्ते सुराउबंधं तु जइ इहागच्छे अन्नह अट्ठावन्ना जं आहारगदुगंबंधे

७ अपूर्वकरणनवबंधाइ एतलउ सत्तर॥

७

अडवन प्रकृति। अपूर्व आवमा गुण निद्रा द्विक छेद छपनइ प्रकृतिनउ बंध बाधइ पांच सुरद्विक २ पंचेंद्रीजाति १ शुभविहायोगति त्रसादिक नव

॥८॥ अडवन्न अपुव्वाइमि निद्ददुगंतो छपन्न पणभागे। सुरदुगपणिंदि सुखगइ तसन-

१८॥ औदारिकद्विक विना आहारकद्विक शरीर अंगोपांग २ वैक्रियद्विक गुणप्रकृति॥ समचउरसंस्थान निर्माणकर्म जिननामकर्म शुभवर्णादिक ४ अगुरुलघु आदि चइ प्रकृति ४ चोसठ प्रकृतिनउ अंतर्कीजइ॥

व उरल विणु तणुवंगा ॥९॥ समचउरनिमिणजिणवन्नअगुरुलहुचउ छलंसि तीसंतो।

चरम भागे छवीसवीस प्रकृति बांधइ॥ हास्य रति दुर्गंछा भय एतलइ प्रकृति विना छेद १० अनिवृत्ति भागपण कीजइ। एक की प्रकृति उतीकाजइ।

चरमे छवीसबंधो हासरईकुच्छभयभेओ ॥१०॥ अनियट्टि भागपणगे इगेगहीणो दु-

एकेक प्रकृति हीन बावीस मा हिय्या॥ २२ २१ २० १९ १८ पुरुषवेद संज्वलना कषाय ४ पर्यंत अनुक्रमि छेद कीजइ सूक्ष्मसंपराय सतरह प्रकृतिनउ बंध हुवइ॥११॥ चारि दर्शनावरण

वीसविहबंधो॥२२।२१।२०।१९।१८। पुमसंजलणचउण्हं कमेण छेओ सतर सुहुमे ॥११॥ चउदं-

नावरण ४ उच्चैर्गोत्र यशनाम २ ज्ञानावरणी अंतराय ५ दशप्रकृति १० एसा लइ प्रकृतिनउ छेद कीजइ। एतलइ उपशांतमोहइ क्षीणमोहि सजोगि कहइ। एक प्रकृति सातावेदनी बांधइ। अयोगि बंधनउ छेद करइ

सणुच्चजससनाणविग्घदसगं ति सोलसुच्छेओ। तिसु सायबंध छेओ सजोगि बंधंतुणंतो

अ ॥१२॥ उदओ विवागवेयणमुदीरण अपत्ति इह दुवीससयं। सत्तरसयं मि-

१२२ मिथ्यात्वे

8

कर्मग्रंथ

सत्तरसयं मिच्छे मीससम्मआहारजिणणुदया॥१३॥ सुहुमतिगायवमिच्छं मिच्छंतं सासणे

इगारसयं नरयाणुपुव्विणुदया अणथावरइगविगलअंतो॥१४॥ मीसे सयमणुपुव्वि

णुदया मीसोदएण मीसंतो। चउसयमजए सम्माणुपुव्विखेवा बिअकसाया॥१५॥ मणु

तिरिणुपुव्वि विउवट्ठ दुहगअणाइज्जदुग सतरछेओ। सगसीइ देसि तिरिगइआउ

निउज्जोअ तिकसाया॥१६॥ अट्ठच्छेओ इगसी पमत्ति आहारजुअलपक्खेवा। थीणति

गाहारगदुगछेओ छस्सयरि अपमत्ते॥१७॥ सम्मत्तंतिमसंघयणतिअगच्छेओ बिसय

रि अपुव्वे हासाइछक्कअंतो छसट्ठि अनिअट्टि वेअतिगं॥१८॥ संजलणतिगं छ छेओ

सट्ठि सुहुमंमि तुरिअलोभंतो। उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनारायदुगअंतो

॥१९॥ सगवन्न खीणदुचरिमि निद्ददुगंतो अ चरिमि पणपन्ना। नाणंतरायदंसणचउछेओ सजो

गि बायाला॥२०॥ तित्थुदया उरलाथिरखगइदुग परित्ततिग छ संठा

णा अगुरुलहुवन्नचउ निमिणतेअकम्माइसंघयणं॥२१॥ दूसरसूसरसायासा

गयरं च तीस वुच्छेओ बारस अजोगि सुभगाइज्जजसन्नयरवेअणिअं॥२२॥ तस

9

कर्मग्रं·

विगलपणिंदि मणुआउ नाइ रजिणु रुवं तिचरम समयंमि ताउ दयंमि खीणो उइरउ बुदीरणापरमपमत्ताईस

गाउएसु उदयंस पमत्ताई सगिति रुणा। पागंतरे ठेवय णियारसार ठइसाणि तिगइ नसउ रहउप

ममत्ता इक्कपुआस सन्ना गिउदीरणं उ अजुदीर युअजोगा। २४ पमापयउ ति उणा वेअणिरुआहार

कस्यह १ घाणतिंगुअ मणुआउ १ पमत्तंता अजोगिअजुदीर गासय बं। २५। उदीरणा संमत्ता। सत्ता

के आणठई बंधइलहुअइला ठाणोसंत जुडयाल सयं। थठजा उवसमुविजिन बिअ धउ नइदाधउ

रहुअउ बाइंच उ कौणधतिरिनस्या उरविउ बिआल सयं धर सम्मा इचउसु मनेगारवयं मिइगवनस

यास्मदवा रउरववगे तुयप्पच उसुवि। पणयाल रथ पनरय तिसिरा उदिणा सन्नगविउ अउनासे

१२० जाअनिअ हापढम नाना॥ २७॥ यावर २ निरि २ नरया २ ययव २ उग चीण तिगइग विगल ३।

साहारं। सोलसउडुवीस सयं बिअंसि १२२ बिअधति अकसायं ता ४।२९। तइआइसु चउदसार

४। ३ उतर १३ आधबा २१२ पबा १०६ द पणा १०५। आ चउ १०४ घाति दि अस हा १०३। णा कमासान उ १इ

खिरहासबगइदुस श्रुरियकोद। मयश्मायस्वअ। उणासुदमिडसद १०२ ला तेना खाण

उवरिमगसय एणा उनिइश्वउ नवनवइ एएचरम ससमयाव उदंसणधनाण विग्धंता। पा ३१ प।

10

अप्रमाणिगुणपत्रकनिमगाइकरादविहिकर खगइविकर गंधकद्दिकाफरसआठ एवंषट्प्रकृतिनाली... नइसंघयण

णसाइ ल्पसंठा णिग्रजाणिगुच्चरिमेरेव्वखगइगंधदुग। फासदुवन्नपरसतणुबंधणपसंघायपण

नामकर्म॥३२॥ संघयण६ अथिर६ संठान६ ... अगुरुलघुआदि४ अपर्याप्तानामकर्म सातावेदनी असातावेदनी

निमिणं॥३३॥ संघयणाइअथिरइसंघयणाइक्क। अगुरुलहुचउअपज्जत्तं सायंवअसायंवा।प

एकमाहितीएकप्रकृतिरसमुरनामनी... ॥३३॥ एवकत्रिप्रकृति...

रित्तुरवंगतिगअसुसरनिअं॥३३॥ बिसयरिखओयचरिमे। तेरसमणुअतसतिगजस

नामकर्म आदेयनामकर्म जिननामकर्म उच्चगोत्र सातावेदनी ... असातावेदनी

माइज्जंसुभगजिणुच्चपणिंदिअसायासायगयरछेउ॥३४॥ नरअणुपुव्विविणावा बारसर

निवरमवइतलस्समइकेनगवंनक्षयकरीनइसिद्धिगमो... श्रीदेवेंद्रसूरिविरचितं... ॥३४॥

चरमसमयंमिजोखविउ। पत्तोसिद्धिंदेविंदवंदिअंनमहतंवीरं॥३५॥ सत्तासमत्ता॥छ॥ छ॥ छ ॥

इतिकर्मस्तवावचूरिसमाप्ता॥छ॥ ॥ ॥छ॥ ॥

10

एवमाबंधविधानकर्मबंधनानंदसीसकाणान श्रीवर्धमानजिनानामान्यकरनीमाहिचंदमाममान ... नामा

॥६०॥ बंधविहाणविमुक्कं वंदियसिरिवद्धमाणजिणचंदं। गईआईसुंवुच्छं समासओबंधसामि

नरक॥ गति४ इंद्री५ काय६ ... योग३ वेद३ कषाय४ ज्ञान५ अज्ञान३ संयम७ दर्शन४ लेश्या६ सम्यक्त्व६ मन

त्तं॥१॥ गइइंदिएयकाएजोएवेएकसायनाणेय। संजमदंसणलेसाभवसम्मेसन्नि

हारि२ आहारी२॥२॥ जिन१ सुरद्विक२ वैक्रियद्विक२ आहारकद्विक२ देवआयु१ नरकत्रिक३ सूक्ष्मत्रिक३ विकलत्रिक३ एकेंद्री जाति स्थावर

निअहारे॥२॥ जिणसुरविउवाहारदुदेवाउअनरयसुहुमविगलतिगं। एगिंदिथाव

नामकर्म आतपनामा नपुंसक मिथ्या कवेद ... हुंडकसंस्थान ... अनंतानुबंधी ... संघयण ... खगइ ... नीचगोत्र स्त्रीवेद दौर्भाग्यत्रिक

रायववनपुमिच्छहुंडछेवट्ठं॥३॥ अणमज्झागिइसंघयणकुखगइनिअइच्छिदुहगथी

थीणद्धित्रिक उद्योतनाम तिर्यग्द्विक तिर्यगायु मनुष्यायु मनुष्यद्विक ... वज्रऋषभनाराचसंघयण ... सुरद्विक आदि देइ ...

णतिगं॥ उज्जोअतिरिदुगंतिरिनराउनरउरलदुगरिसहं॥४॥ सुरइगुणवीसवज्जं इगसउ

... सउपयोगमनिपर्यो ... मनुष्यबंध१००॥ ... ॥५॥

सउहेणबंधहिनरया। तित्थविणामिच्छिसयं१००। सासणिनवुचउविणाछनुई॥५॥ विण

11

= संयमसासान
दकालाकदाचा
त्विपादक्षावि
तिसठत्रेसंय
मणसातमतेप
सासानदसंयम
ना॥२॥

...जिनारवपल
दर्पांवममकि
नरठनेमिथ्या
त्वपकालदि॥२॥

अनंतानुबंधीयाआरिआदिदईनइवावी बअबरिअबिअविरनउणणणइबंधइजिननामइमनु इमरनमनाइबिबीआदिदईनइ
मप्रकृतिरालीनइओधमाकनी॥ पर्यन्ताऊऊइएमिमदिन। बिऊइबिबीनणइबंधकदिउ॥

अउ अणछवीसमीसं ७०। विसयरि समंमि ७१ जिणाइनराउ१ जुआ। इअ रयणाइसु भंगो१०१। १००

पंकप्रभाआदिदईमइमाकनीबिकं१इबी पनीबंकरनामनबंधइबेपि सास्वादनि९६मिश्रे॥ जिननामअनइमनुअपनुआऊश्रवजिहाली मनुष्य
एकमुमिथ्याहि१०० ममकिनउ१ नरदुगपंचइसानमइनरकि९९प्रकृतिबांधइ॥

९६। ७०। ७२। पंकाइसु तित्थयर हीणो१००। १००। ९६। ७०। ७२।६। अजिणमणुआउ ओहेसत्त

बिकरवाबिमीनरवबिबिबिनामिथ्याबईज९६॥ प्रकृतिबांधइएकाउंप्रकृतिमा तिर्यंचनुंआउखुंनेनपुंसकचउप्पमापनक्रकृति अनंतानुबंधीआआदिदई
स्वादिबांधइ९१ हालीमइबाकाणा॥ ७ २५॥ नउकमप्रकृतिराली

मिए नरदुगुच्चविणु मिच्छे९६। इगनवई साणेण ९१। तिरिआउ नपुंसचउ वज्जं ७। अणचउवीसविणा

नइअनइमनुष्यदिकरउचेगोत्रएबिमिसदिनकाऊइएनलइमिश्रअनइसमकिनइं एकतुसनरा७०प्रकृतिबउ पर्याप्तानिर्यंचनइंबंधकइबिना
मनविबंध५॥ उबंधइमिथ्याबनउ११७

विरहिआ। मीसनरदुगुच्चायसंमं रि मीसड गम्मि ४। ७०। सत्तरसउ ओहि मिच्छे११७ पज्जतिरिआवि

जिननामआहारकिद्विक२ एकतुबीसमादिनरकादिरइप्रकृतिविनामाधा दिवनाउंआऊखुंअनइअनंतानु नामिश्रउणणणइ६९बांधइ। दिवनानाआउ
प्रवसिदालानउ१॥ दनि१०१एकसतएकानरनेउबंध॥ बंधीयाधआदिदईनइउ३१प्रकृति पासदिवकोऊइपनमिइ७० मक्रति

उ जिणाहारं॥ ७॥ विणु नरयसोल सासणि सुराउ अणएगतीस विणु मीसे६९ ससुराउ

प्रकृतिसमकितइ॥ बीजाकषायच्यारिधविनादेशविरतिइ६६ प्रकृतिबां इमतिर्यंचनीपरइबिऊउणणणइ मिथ्याहि११७ मिश्र६९
६६॥ मनुष्यजातियांबंधइ१२०प्रकृतिबाम सास्वादनि१०१ अविरतिइ७१

सयरि ७० सम्मो बीअकसाए विणा देसे६६। ९४। इअ चउगुणेसु वि नरा१२०।११७।१०१।६९।७१

११

रनलइच्यारिदरं१मनु बिशेषअयनअविरत॥ अमइउअप्रमनपत्र इत्यादि जिननामआदिदई
गुणणाणधा जिननामकाहिनकाऊइदेशविरति ५९ आलिबेधा नइअप्पारप्रकृति एकतुबीसमादिकादोशबाकनीएकमउनवप्रकृति
६३

रमजयामं जिणाइदाहारदुगाईस्थापण पणइस्यादि। जिणइक्कारसहीणं नवसउ अपज्जतिरिअ

१०९अपर्याप्तमनुष्यनइं नरगनापरिइसुरादवनाम उघइजमिथ्याहिउ पकंमिनिकमहिनकाऊइबंधइएकतुच्यारिमिथ्याहि१०४
१०९अपर्याप्तानिर्यंचनइ१० निर्यंचएनिएनलअबिशेष सास्वादनि९६मिश्र७०अविरति७२ बिऊदवलो

१०९ नरा १०९। १०१। नरयव्व सुरा नवरं। उहे मिच्छे इगिंदितिग सहीआ १०४। ९६। ७०। ७२। कप्पदुगे

कल्पगइइमति १०४ १०३ ९६ ७० ७२ जिननामरहिनकाऊइजोतिषीभवनपतिव्यन्तरमाहि १०३ मिथ्याहि सास्वादनि९६मिश्र७० रत्नप्रभा
बंधइ॥ १०३ अविरति७२॥ ११॥ नापरिइं

वि अ एवं १०४। १०३। ९६। ७०। ७२। जिणहीणो जोइभवणवणे ३॥ १०३। ९६। ७०। ७२॥११॥ रयण

मनकुमारआदिदईबंधइ मिथ्याहि सास्वादन९६ मिश्र समकि
बंधइ१०१ १०० ७० नउ२ आनतादिकइदेवामउद्योतप्रकृतिनीकाऊइ९७ ९६९२

व्व सणंकुमाराइ आ १०१। १००। ९६। ७०। ७२। आणयाइ उज्जोअचउरहिआ। ९७। ९६। ९६

७० ७२ अपर्याप्तानिर्यंचनीपरइंएकमउनव १०९ एगिंद्रीनइंपृथ्वीनइंअपकायनइंवनस्पतीनइं बिगलत्रिकन पंचेंद्रिसाम
इ१०९॥१२॥ चामपनइनेर

७०। ७२। अपज्जतिरियव्व नवसय १०९। मिगिंदि पुढविजल तरु विगले ३।१०।११।१२। छनवइसा

बिनसास्वादनि बंधबंध॥ कनलाकइ९४ बउपणाउंबंध निर्यंचनुंआउखुंअनइमनुष्यनाआउखाबिना।काऊदेशेणायरिरवयी
९६

साणि ९६ विणु सुहुमतेर॥ केइ पुण बिंति चउनवई ९४। तिरिअनराऊहिं विणु तणुपज्जत्तिं न ते जंति

शिकाधीनइशरीनकरइपनलइमनुष्यनिर्यं

12

कर्मग्रं॰

चनउंचाउत्तं नवबंधसाइ॥ पाठांतरं॥ ध्रुवंद्वानिबंधनइचमकायनइजिमउणकलस येयवंधसकहिउहशनिम कालिन्तइत्यादि गतिचमनिउकायवाउका जिननामादिइत्यादि यनइ॥ प्रकृतिमउपत्रिका

तिजुत्ता।२३। न तेजंति पाणं तरा उजपत्ति दितासगइ॥२०॥१७।१०१ इत्यादि तासर्व१०३। जिणि इक्कार

उहिमतिवरपचिनउकसि मलामाणरवचनायागरउपत्रवंधसजि पनरउवंध॥ मउणगाणवंधकहिउहनिमजालिउ॥ इत्यादि॥ अदारिककाययोगलिममत्रपनइनागइवंधतिमजाणि वउ॥

नरइतिउवरविणा। मणवयजोगे उ अदारए॥१७।१०१ इत्यादि उरालनरंगु२४।१०३।१०१।७ इ०उ

इत्यादि अदारिकमिश्रशा४ आहारकादिविनाउधवंधइ।११४ एकसूप मिथ्याइ।१०९ जिननामादियांचप्रकृति उखीकोजइ ११४ मिथ्यावे।

उदइत्यादि। तम्मिसे।१४। आहारदुगविणा दे॥१४॥ वउदसमउ मिच्छि१०७। जिणपणगहीणं सासणि

प्रकृतिवंध प्रकृतिनातिर्यंचमनुष्यनांआउषांदालीनइ सूक्ष्मआदिदइ तेरप्रकृतिसि अणंताणुवंधीआदिदेइनइ वलइ१०० २४ इवलीजिन नामादिमिलि१४ तेवीसप्रकृतिविना प्रकृति दिपप्रकृति

णिछ्यावउनवइविणा। नरतिरिआउ सुहुमतेर॥१५॥ अणचउवीसाइ विणा। जिणपणय

सहितकाउइपनलइ७५ संयोगिकेवलीनइ अदारिकमिश्रयोगइ मनुष्यनांआउषांदालइ नइ प्रकृतिदालीन आहारकहिकमइत्तणा प्रकृतिअविरतगुणथाणइवांधइ॥ तेरमाहिंपकमानावेदनीयंधविनानिर्यंच इकार्मणकायथोगिअदारिकमिश्रनीपरइवंध॥ णवंधवंधइ॥

जुअसम्मिजोगिणा साय। विणि तिरिनराउ कम्मे वि॥१६॥१०७।७१।७५ एवमाहारदुगि उदा

॥१६॥ देवतानइवंधइ जिमदेवउ वंधलइ वउवेक्रियकाययो गकिकनइवंधजाणिवउ॥ तिर्यंचमनुष्यपविक्रनांआउषांरहितवेक्रियमिश्रइ१०२ प्रकृतिवंधनइ

हरा॥ हाउसुरउदो विउवे॥१७॥१०३।७५।१०२।१०१।९४। तिरिअनराउरहिअ तम्मिस्से१०२।१०१॥ १२

पाव त्रिकंर पहिलइ धकषाय दीकषायत्रीजइ विकषायनवगुणथाणे ... णासरीखवंधत्रीजे विकंकषाय संजलनपहिलत्रिकंन वगुणथाणा वंधलइउत्रिकंविषे इवमचिकंकषायविकंठणथाणावंधधीजइ विकंकषायआदिगुण पांचगुणथाणामरीखवंध॥ सरीखसंजलनइलोभइस्तुल

७४।७७।७३।। वय तिगाइ मसुविअसतिआक्साय नवदुदुचउपंचगुणा॥ च्यासंजलणतिगनवबाद

सरीखवंधअसंयमइ बारइपहिलांचारिगुणथाणमरीखवंधअज्ञान बारसगुणथाणमरीखवंधकइ अचक्षुदर्शनिअनइचक्षुदर्शनिपहिलांबारगुणथाण विकंदर्शनिबाद्रगुणथाणाकइ॥ लगइवंधकइयथाख्यातचारित्रउपहिलागुणथाणालगइ

सालीस ॥७५ चउअजइध उतिअन्नाणतिगवत्रा। बारसअचरकुचरकुस्स२०। पढमाअहखाइचरम

इस्वारिमरी मनपर्यवज्ञानइ मानगुणथाणअम सामायकचारित्रइ छेदोपस्थापनीअमआदि चारित्र ... वंधाकवलज्ञानइकवलदर्शनइ छदनइ चउ॥१८॥ नवादिदेईनइ ... गुणमरीखवंधपरिहारविशुद्धि अपुमत्तादि विगुणथाणाम ...

चउ॥१८॥ मणनाणि सगजयाई सामाइअछेअचउदुन्नि परिहारे। केवलदुगि दो चरिमाज

विरनगुणथाणसीधुरिनवलगइवंधकइ मतिज्ञानश्रुत ... आवलगइउपशमइ चारित्रगइ ... मिथ्यात्वमिक्रमिथ्यात्व कानअवधिज्ञानअवधिदर्शना॥१९॥ गुणथाणलगइवंध॥ सास्वादन२ मिश्र३ देशवि

याइ नवमइसुउहिदुगे॥१९॥ अडउवसमि चउवेअगि खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे

रतिपमत्तसंपरायपथासिगुणथाणसं दिवाणिआपस्थानक॥ सिद्धनिजगुणथाणवंध उपशामिवर्तमानांकनांआउषानावंधनकइ स्थानककवनुपादइगुणथालेवंधनेइवउ आहारानइनिरयगुणथाणलगइ इवधा२०॥

सुहुमि सठाणंतेरसि। आहारगि निअनिअगुणो हो॥२०॥ परमुवसमि वट्टंता आउ न बंधंति

तेहणाअविरतगुणगाणइ देवमनुष्यनांआउषांरहितवंधा दशविरतिआदिदेईनइ ... देवतांआउषानवांधइ॥२१॥

तेण अजयगुण७५। देवमणुआउ हीणो। देसाइसु पुण सुराउ विणा॥ दश। ५८। २१॥ उदे

13

३ कर्मग्रं

बंधइ पंकसु अहारा ११८ वज्जमिथ्या बंधइ आहारकद्विक २ रहित पदिउ जो बिंदु लेश्याइं । मतांबरनामरहित साश्वादनगुणठाणउं आदि दिई नइ सघलेगुणठाणे
मिथ्यात्वे ११७ बंध इ । ओघबंध ॥

अणाहारसयं १२० आहारुदुसण्णाइ लेसतिगे । तं तित्थोणं मिच्छे ११७ साणाइसु सव्वहिं ओहो १०१

बंधकालितिगु ॥ २२ ॥ तिजो लेश्याइं नरकत्रिक आदि दिई नव ९ उद्योत चउ नरकत्रिक आदि दिई बार १२ शोषपक्षसु ज्ञानि बंधइ लागलो कर्मस्तवनी परे बंधओ
कनिशकाकाठ १०१ कसवइ स्थापरवंधइ बंधइ ॥ बारमकनि पक्षे १०८ कमिट्ठामीइ ॥ कम्पलिश्याइ बांधइ वाका लिवउ नरकत्रिकादि १२ अकृति

७४ । ७७ ॥ २२ ॥ तेऊ १११ नरयनवूणा । उज्जोयचउ नरयबार १२ विणु सुक्का १०४ । विणु नरयबार पम्हा

विनापद्मलेश्याइं १०८ बंधइ आहारकद्विक २ जिननामरहित मिथ्यात्वे १०४ बंधइ पद्मलेश्याइं १०८ बंध सर्वगुणठाणे भव्य संज्ञी बंधइ १२० अभव्य नइ ११७ मिथ्यात्व ११७ बंध
जिननाम २ शुक्ललेश्या १०१ पद्मलेश्या १०५ ॥ २३ ॥ संज्ञीया नइ ४ गुणठाणा ॥

अजिणाहारा इमा मिच्छे १०८ । १०१ । १०५ ॥ २३ ॥ सव्वगुण भव्वसन्निसु ओहु अभव्वा असन्नि

असंज्ञी नइ ११७ बंधइ ११७ मिथ्यात्व मरीखव बंध ॥ सास्वादन असंज्ञीजीव संज्ञीयानी परइ १०१ बंध मिश्र अणाहारी कारइ कार्मण काययोगनी परइ बंधकालितिगु ॥ २४ ॥

मिच्छसमा ११७ मिच्छसमा । सासणि असन्नि १०१ संनिव्व कम्मणभंगो अणाहारे ॥ २४ ॥ १ ॥ २ ॥ १०७ । ७५ ॥

विज्ञान समाप्ति लेश्या पद्मआदि लाउ लाणो बंधविछेद लेश्याइ गुणठाणा ॥ एवं बंधसामित्व ग्रंथ श्री देवेन्द्रसूरिइं कीधउ । एह वत्र श्री आलि वत्र । बीजउ कर्मग्रंथ कर्म
मानलगइ जदइ वत वंध । शुक्ललेश्याइ तेर गुणठाणा पामीउ बंध ॥ स्तव सांभलीने

२४ । तिसु दुसु सुक्काइ गुणा । चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ॥ देविंदसूरि लिहियं । नेयं कम्मत्थयं

जीन ॥ २५ ॥ इति बंधसामित्वसमाप्तः ॥ छ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ शुभं भवतु ॥ ॥ ग्रंथाग्रं ५८० ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

सोउं ॥ २५ ॥ इति बंधसामित्तं सम्मत्तं ॥ छ ॥ श्रीरस्तु ॥ छ ॥ छ ॥ ॥ ॥ छ ॥ । श्री ॥ ॥ छ ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ १३